मनुष्य जब अहंकार शून्य हो जाता है तब उसका मन निर्मल हो जाता हैः प्रो डॉ अर्जुनदेव चारण

राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद सम्पन्न

(वागड़ दूत संवाददाता)

डूंगरपुर। राजस्थानी भक्ति परम्परा अपने आप में अद्भुत है। यह मन एवं चित्त में भेद करती है। मन का संबंध संकल्प से और चित्त का संबंध चेतना से जुड़ा हुआ है। मनुष्य जब अहंकार शून्य हो जाता है तब उसका मन निर्मल हो जाता है और मन की निर्मलता ही भक्ति है।यह विचार ख्यातनाम कवि आलोचक प्रो डॉ अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादेमी एवं राजस्थान बाल कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में शनिवार को स्थानीय साईं पैलेस होटल के सभागार में व्यक्त किए।

इस अवसर पर उन्होंने भारतीय एवं राजस्थानी भक्ति परम्परा की विशद विवेचना करते हुए महर्षि नारद को सबसे बड़ा भक्त बताकर उनकी भक्ति साधना को उजागर किया। राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद के संयोजक हर्षवर्धन सिंह राव ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि उपेंद्र अणु ने कहा कि राजस्थान में वागड़ अंचल की भक्ति परम्परा बहुत प्राचीन एवं गौरवशाली रही है जिसमें मावजी महाराज, गोविन्द गुरु एवं गवरी बाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान बाल कल्याण समिति के निदेशक मनोज गौड़ ने कहा कि हमें हमारी मातृभाषा राजस्थानी एवं इस भाषा में रचे गये साहित्य को उजागर करना हमारा कर्तव्य है। क्योंकि, हमारी मातृभाषा एवं साहित्य हमारी अस्मिता से जुड़ा हुआ है। उद्घाटन समारोह के आरम्भ में साहित्य अकादमी के उप सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत उद्बोधन के साथ ही साहित्य अकादमी द्वारा देश के ग्रामीण क्षेत्र एवं अचल विशेष में किए जाने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। उद्घाटन सत्र का संचालन दिनेश प्रजापति ने किया।

वागड़ के प्रतिष्ठित लेखक भोगीलाल पाटीदार को हाल में साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा होने पर साहित्य अकादमी में राजस्थानी संयोजक डॉ अर्जुनदेव चारण के सानिध्य में भव्य अभिनंदन किया। साहित्यिक सत्र मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ सुरेश कुमार सालवी की अध्यक्षता में आयोजित दो साहित्यिक सत्रों में राजेंद्र पांचाल ने कृष्ण भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल, सतीश आचार्य ने राम भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल, घनश्याम सिंह भाटी ने राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं कल्लाजी महाराज एवं डॉ. रेखा खराड़ी ने राजस्थानी आदिवासी भक्ति साहित्य विषय पर अपना आलोचनात्मक आलेख प्रस्तुत किया। सत्र संचालन सूर्यकरण सोनी ने किया।

समापन समारोह प्रतिष्ठित कवि कथाकार दिनेश पांचाल ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि वागड़ की भक्ति परम्परा प्रेम एवं समर्पण की है जिसमें भक्त ध्येय स्व के बजाय लोक कल्याण है।

मुख्य अतिथि वागड़ अंचल के वयोवृद्ध रचनाकार ज्योतिपुंज ने कहा कि वागड़ की भक्ति परम्परा भारतीय सनातन भक्ति परम्परा से जुड़ी हुई जो मानवता का पर्याय है। समारोह संयोजक हर्षवर्धन सिंह राव ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

सत्र संचालन रामचन्द्र भारती ने किया।

इस अवसर पर डॉ गजे सिंह राजपुरोहित, डॉ. सुनिल पंड्या, डॉ.प्रवीण पंड्या, डॉ. मनोहर सिंह राव, डॉ जयंत यादव, भारती जोशी, महेश देव नन्दोड, जेठानंद पंवार, जगदीश गुर्जर, राजेन्द्र सिंह चौहान, हिमांशु चौबीसा, गिरीश पानेरी, वीरेंद्र सिंह बेडसा, विपुल विद्रोही, डॉ प्रियंका चौबीसा, अनिता पांचाल, राधेश्याम पाटीदार, अनिल लौहार, तुलसी कोटेड़, हेमन्त शर्मा, लोकेश जोशी, राजकुमार कसाण, मंजुला पंड्या, ममता पांचाल, बलवीर सिंह राव, नारायण लाल रोत, करण सिंह राव एवं वासुदेव सूत्रधार सहित अनेक प्रतिष्ठित रचनाकार भाषा-साहित्य प्रेमी एवं शोध-छात्र मौजूद रहे।